



जनपद कानपुर देहात में कृषि भूमि एवं कृषि यंत्र उपयोग की स्थिति का विश्लेषण।

नीरज कुमार (शोधार्थी)

गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज चरखारी, महोबा, उत्तर प्रदेश

डॉक्टर चुन्ना सिंह (रिटायर्ड प्रोफेसर)

गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज चरखारी, महोबा, उत्तर प्रदेश

DOI- 10.5281/zenodo.7075832

सार

बुन्देलखण्ड के अन्य क्षेत्रों की भाँति जनपद कानपुर देहात में कृषि क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। यह एक अल्प विकसित क्षेत्र है, जहाँ अभी भी परम्परागत एवं अल्पवर्धित तरीकों द्वारा कृषि की जाती है, तथा जिसके कारण भूमि की उर्वरकता बहुत कम है। यहाँ की कृषि स्वतंत्रता के समय से ही आर्थिक गतिरोध से प्रभावित रही है। यहाँ कि कृषक जनसंख्या 39.9 प्रतिशत तथा कृषि श्रमिक 30.9 प्रतिशत है। इस क्षेत्र की कृषि की प्रमुख विशेषताएं हैं-दो फसलीय क्षेत्र का अभाव, सिंचाई की कमी, अनीयमित वर्षा के कारण शुष्क खेती का प्रचलन, मिश्रित कृषि प्रणाली और व्यवसायिक फसलों की कमी तथा कृषि करने का परम्परागत तरीका।

प्रस्तावना

मानव जीवन की दृष्टि से कृषि का विशिष्ट महत्व है। क्योंकि कृषि ही मानव जीवन का आधार है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की श्रम शक्ति का लगभग दो तिहाई भाग कृषि क्षेत्र से आजीविका प्राप्त करता है। कृषि के द्वारा मानव अपना भरण-पोषण तथा आर्थिक विकास करता है। कृषि के विकास के साथ-साथ मानव सभ्यता विकसित हुई। मानव की सबसे प्राचीन प्राथमिक एवं आर्थिक क्रिया कृषि है। इस क्रिया के फलस्वरूप भूमि को जोत कर फसलों उत्पादन किया जाता है, फसलों उत्पादन के लिये आधुनिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। वर्तमान समय में कृषि का अपना एक स्थान है, जिसके लिये भारत सरकार द्वारा एवं कृषि

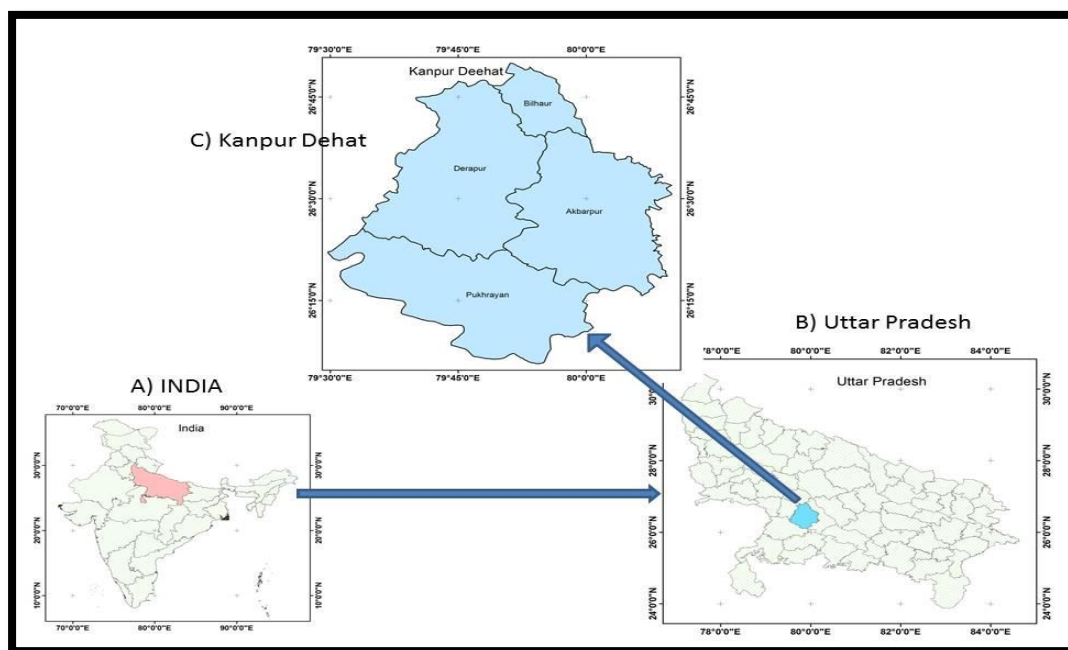
मंत्रालय द्वारा फसलों उत्पादन को बढ़ाने के लिये हरित क्रांति एवं यन्त्रीकरण की सुविधाओं द्वारा कृषि व्यवसाय को प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप भारत देश आज खाद्यान्न उत्पादन की दृष्टि से आत्मनिर्भर की श्रेणी में आ गया है।

भारत देश में 1826 लाख हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य है। भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का 20.2 प्रतिशत से अधिक योगदान है। अतः इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है, कि कृषि भारत के लोगों का मात्र जीवकोपार्जन का साधन ही नहीं बल्कि यह जीवन का तरीका है।

अध्ययन क्षेत्र

कानपुर देहात जनपद उ०प्र० राज्य के गंगा-यमुना दो-आब में अवस्थित है जिस कारण यहाँ की कृषि बहुत उपजाऊ किस्म की है। इसका ज्यादातर क्षेत्र यमुना नदी के उत्तरी

भाग में स्थित होने के कारण अधिक उपजाऊ है। कानपुर देहात जनपद के पूर्व में कानपुर नगर दक्षिण पश्चिम में जालौन, दक्षिण पूर्व में हमीरपुर, पश्चिम में औरैया, उत्तर में कन्नौज जनपदों से घिरा है।



कानपुर देहात जनपद का अक्षांशीय विस्तार २६°३०" उत्तरी अक्षांश से २६°३४" उत्तरी अक्षांश व देशान्तरीय विस्तार ७९°९६" से ७९°९७" पूर्वी देशान्तर तक सिद्ध है। कानपुर देहात जनपद में सेगर नदी तथा रिहन्द नदी बहती है। इस जनपद में ७ तहसील-सिकन्दरा, भोगनीपुर, डेरापुर, अकबरपुर व रसूलाबाद है। अध्ययन क्षेत्र देश के विभिन्न भागों में सड़क परिवहन एवं रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग कानपुर-झाँसी व नेशनल हाइवे मार्ग से जोड़ता है। रेलमार्ग के अन्तर्गत कानपुर झाँसी रेलमार्ग अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

भौतिक भू दृश्यों एवं भू-आकारों के आधार पर जनपद कानपुर देहात को तीन भागों में बाँटा गया है-

१. गंगा नदी व रिहन्द नदी का दो आब क्षेत्र
२. रिहन्द नदी व सेगर नदीका दोआब क्षेत्र
३. सेगर नदी व यमुना नदी का दोआब क्षेत्र

कानपुर देहात जनपद में कृषि कार्य नदियों के पाट प्रदेश में कम मात्रा में किया जाता है जबकि आन्तरिक भागों में कृषि कार्य ज्यादा किया जाता है। इन क्षेत्रों में सिंचाई की अति उत्तम व्यवस्था होने से प्रति हेक्टर उत्पादन दिनों दिन बढ़ता चला जा रहा है। कानपुर देहात जनपद का यमुना नदी के

उत्तर दिशा में पूर्व में पश्चिम की ओर फैला चम्बल का जंगल डाकुओं के लिये विख्यात रहा हे जबकि गंगा नदी का तट साधुओं के लिये विख्यात रहा है। इस क्षेत्र में मिट्टी, कावर, दोमट, बलुई दोमट व चिकनी मिट्टी व कंकड़ीली मिट्टी का विस्तार लगभग तीनों क्षेत्रों में पाया जाता है।

विधितंत्र

वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कृषि भूमि हेतु योजना तैयार करना है। यह योजना जनपद में राज्य एवं केन्द्र सरकार के प्रकाशित एवं अप्रकाशित सूचनाओ तथा सांख्यिकीय आंकड़े मुख्य सूचना स्रोत होंगे समुचित आंकड़े एकत्रित करने के लिये सर्वेक्षण आपेक्षित है। यह आंकड़े सामान्यता दो रूप में मिलते है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोध

विधि के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। इन आंकड़ों का विश्लेषण शोधार्थी ने एम एस एक्स एप्लीकेशन पर किया है। जिनका विश्लेषण पुनः सारणी एवं आरेख के माध्यम से शोधार्थी ने प्रस्तुत किया है। शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र की आवश्यकता मानचित्र को आरकेजी आईएस एप्लीकेशन पर शोधार्थी द्वारा तैयार किया गया है।

उद्देश्य

प्रमुख शोधकार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पूर्ण करने का प्रयास किया जायेगा।

1. कृषि भूमि उपयोग का अध्ययन करना।
2. कृषि क्षेत्र में प्राविधियों के उपयोग का विश्लेषण करना।

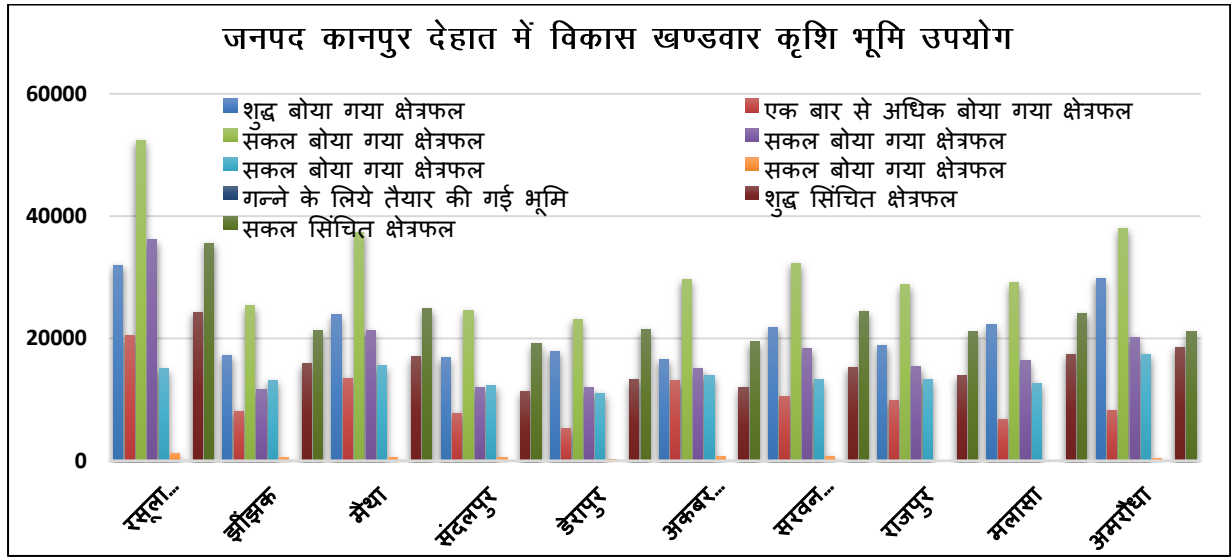
सारणी क.१

जनपद कानपुर देहात में विकास खण्डवार कृषि भूमि उपयोग २०२०

विकास खण्ड	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल	सकल बोया गया क्षेत्रफल				गन्ने के लिये तैयार की गई भूमि	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल	सकल सिंचित क्षेत्रफल
			कुल	रबी	खरीफ	जायद			
रसूलाबाद	३१९७६	२०४३३	७२४०९	३६१३१	१७००९	१२६६	३	२४२९४	३७७९४
झींझक	१७२७२	८०९९	२७३७१	११६७७	१३२०१	४९०	३	१७९१८	२१२३८
मैथा	२३८७६	१३४९८	३७३७४	२१२७७	१७७४३	७७२	२	१७०१६	२४८४८
संदलपुर	१६८७७	७७७०	२४६२७	११९२८	१२२३२	४६४	३	११३४७	१९१०८
डेरापुर	१७९३६	७२२२	२३१७८	११९११	११०६८	१७८	१	१३२३१	२१७३२
अकबरपुर	१६६२४	१३०७२	२९६९६	१७०७९	१३९७८	६७८	१	१२०३३	१९४७६
सरवनखेड़ा	२१८१६	१०४८४	३२३००	१८२९७	१३२९२	७११	२	१७३१७	२४४२२
राजपुर	१८९२४	९८४६	२८७७०	१७३४७	१३३६०	६२	३	१३८८३	२११४२
मलासा	२२२८४	६८३१	२९११७	१६३७०	१२६७७	१०७	३	१७४१३	२४१७७
अमरौधा	२९८६२	८१६६	३८०२८	२०२०६	१७४१२	४०२	८	१८७४७	२११४६

स्रोत. अर्थ एवं संख्या प्रभाग कानपुर देहात २०२०

आरेख क.१



सारणी क्रमांक १ एवं आरेख क्रमांक १ के अंतर्गत जनपद कानपुर देहात में विकासखंड वार कृषि भूमि उपयोग के आंकड़ों को सारणी एवं आरेख के माध्यम से दर्शाया गया है। जिसमें शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल के अंतर्गत रसूलाबाद विकासखंड में २१९७६ हेक्टेयर भूमि है, जबकि सबसे कम अकबरपुर विकासखंड में १६६२४ हेक्टेयर भूमि शुद्ध बोए गए क्षेत्रफल के अंतर्गत आता है। मैथा में २३८७६ हेक्टेयर भूमि, डेरापुर में १७९३६ भूमि, सरवन खेड़ा में २१८१६ हेक्टेयर भूमि, राजपुर में १८९२४ हेक्टेयर भूमि, एवं अमरोधा में २९८६२ हेक्टेयर भूमि शुद्ध बोए गए क्षेत्रफल के अंतर्गत आता है। एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल के अंतर्गत रसूलाबाद में २०४३३ हेक्टेयर, डीझक में ८०९९ हेक्टेयर भूमि, मैथा में १३४९८, सन्दलपुर में ७७७० हेक्टेयर भूमि, डेरापुर में ७२२२ हेक्टेयर भूमि, अकबरपुर में

१३०७२ हेक्टेयर भूमि, सरवन खेड़ा में १०४८४ हेक्टेयर भूमि, राजपुर में ९८४६ हेक्टेयर भूमि, मलाशा में ६८३९ भूमि, अमरोधा में ८१६६ हेक्टेयर भूमि एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र में स्थित है। सकल बोया गया क्षेत्र को चार भागों में बांटा गया है, जिसके अंतर्गत कुल सकल बोया गया क्षेत्रफल रबी फसल के क्षेत्रफल, खरीफ फसल के क्षेत्रफल, एवं जायद फसल के क्षेत्रफल को शामिल किया गया है। जिसमें कुल बोया गया क्षेत्रफल के अंतर्गत रसूलाबाद विकासखंड में ७२४०९ हेक्टेयर भूमि, डीझक में २७३७९ हेक्टेयर भूमि, मैथा ३७३७४, सन्दलपुर २४६२७ हेक्टेयर, डेरापुर २३१७८ हेक्टेयर भूमि, अकबरपुर २६ ९९६ हेक्टेयर भूमि, सरवन खेड़ा में ३२३०० हेक्टेयर भूमि राजपुर में २८७७० हेक्टेयर भूमि मलाशा में २९११७ हेक्टेयर भूमि, अमरोधा में ३८० २८ हेक्टेयर भूमि सकल बोया

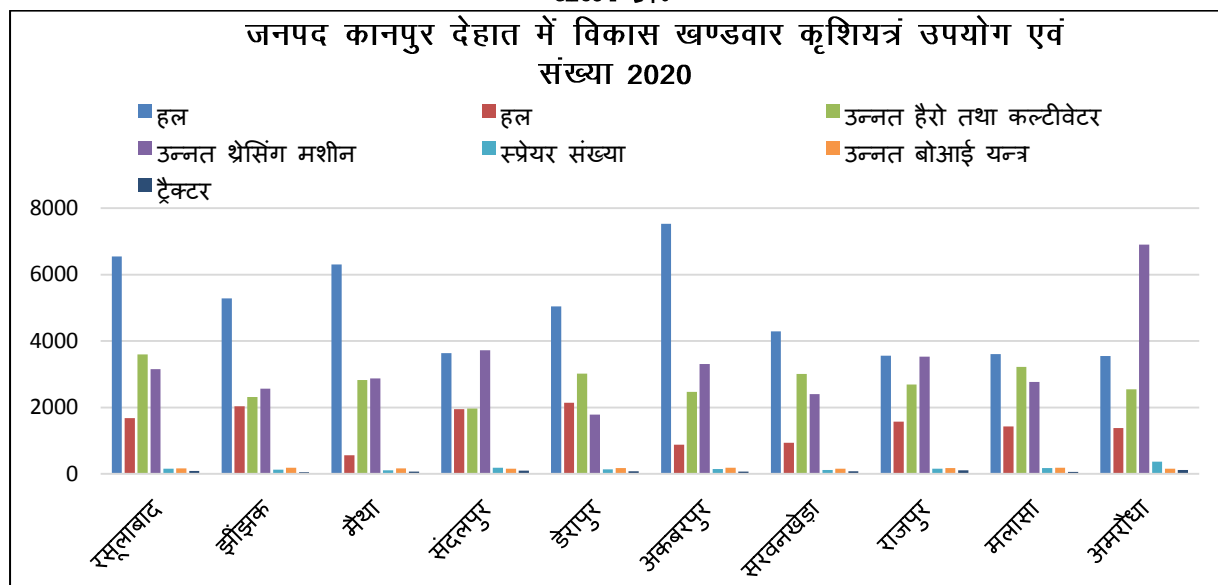
गया कुल क्षेत्रफल के अंतर्गत आते हैं। इसी क्रम में रबी फसल के अंतर्गत रसूलाबाद में 36131, झींझक में 11600, मैथा में 21200, संदलपुर में 11326, डेरापुर में 11311, अकबरपुर में 19099, सरवनखेड़ा में 16299, राजपुर में 19389, मलासा 16390, एवं अमरौधा 20206 हेक्टेयर भूमि रबी फसल के अंतर्गत शामिल है। खरीफ फसल के अंतर्गत विकासखंड रसूलाबाद, झींझक, मैथा, संदलपुर, डेरापुर, अकबरपुर, सरवनखेड़ा, राजपुर,

सारणी क्र.2

जनपद कानपुर देहात में विकास खण्डवार कृषियंत्र उपयोग एवं संख्या 2020							
विकासखण्ड	हल		उन्नत हैरो तथा कल्टीवेटर	उन्नत थ्रेसिंग मशीन	स्प्रेयर संख्या	उन्नत बोआई यन्त्र	ट्रैक्टर
	लकड़ी	लोहा					
रसूलाबाद	6546	1678	3591	3148	150	165	90
झींझक	5282	2031	2317	2569	123	185	52
मैथा	6304	561	2821	2873	105	160	67
संदलपुर	3633	1943	1970	3717	180	155	92
डेरापुर	5042	2143	3022	1787	133	175	80
अकबरपुर	7528	876	2466	3307	146	185	63
सरवनखेड़ा	4289	939	3011	2402	120	158	81
राजपुर	3559	1574	2692	3532	152	178	107
मलासा	3601	1430	3221	2764	170	185	58
अमरौधा	3548	1374	2542	6901	367	154	116

L=ksr- अर्थ एवं संख्या प्रभाग कानपुर देहात 2020

आरेख क्र.२



सारणी क्रमांक २ एवं आरेख क्रमांक २ के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न विकासखंड में उन्नत कृषि यंत्र के उपयोग के साथ साथ परम्परागत लकड़ी तथा लोहे के हल के उपयोग एवं उनकी संख्या का वर्णन किया गया है। जिसमें लकड़ी के हल की संख्या रसूलाबाद, झींझक, मैथा, संदलपुर, डेरापुर, अकबरपुर, सरवनखेड़ा, राजपुर, मलासा एवं अमरौधा में क्रमशः ६५४६, ५२८२, ६३०४, ३६३३, ५०४२, ७५२८, ४२८९, ३५५९, ३६०१, एवं ३५४८ है। लोहे के हल की संख्या क्रमशः उपरोक्त विकासखंड में १६७८, २०३१, ५६१, १९४३, २१४३, ८७६, ९३९, १५७४, १४३०, एवं १३७४ है। उन्नत हैरो एवं कल्टीवेटर की उपयोग संख्या रसूलाबाद, झींझक, मैथा, संदलपुर, डेरापुर, अकबरपुर, सरवनखेड़ा, राजपुर, मलासा, एवं अमरौधा विकास खंड में क्रमशः ३५९१, २३१७, २८७१, १९७०, ३०२२, २४६६, ३०११, २६९२, ३२२१, नीरज कुमार , चुन्ना सिंह

एवं २५४२ है। उन्नत श्रेशिंग मशीन की संख्या उपरोक्त विकासखंड में क्रमशः ३१४८, २५६९, २८७३, ३७१७, १७८७, ३३०७, २४०२, ३५३२, २७६४ एवं ६९०१ है। ट्रैक्टर की संख्या रसूलाबाद में ९०, झींझक में ५२, मैथा में ६७, संदलपुर में ९२, डेरापुर में ८०, अकबरपुर में ६३, सरवनखेड़ा में ८१, राजपुर में १०७, मलासा में ५८, एवं अमरौधा में ११६ है।

साहित्यिक समीक्षा

कृषि भूगोल सम्बन्धी अध्ययन कृषि वैज्ञानिकों, कृषि अर्थशास्त्रियों तथा भूगोलविदों के द्वारा अपने-अपने ढंग से किया जाता है। तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कृषि भूगोल का विधिवत अध्ययन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम फेडरिक १९०७ तथा हेटनर १९०७ ने कृषि भूगोल के लक्ष्य तथा विषय वस्तु की विवेचना की। क्रिजमोवास्की १९११ में कृषि भूगोल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा वेवल ने कृषि समस्याओं का अध्ययन प्रस्तुत किया।

कृषि भूगोल से सम्बन्धित शोधकार्य में देश पाण्डेय १९४२ ने महाराष्ट्र के तीन जिलों-बेलगाँव, बीजापुर एवं धारवार के कपास उत्पादन का अध्ययन किया। उत्तर भारत में सर्वप्रथम वी०एन० मुखर्जी ने ३०प्र० के कृषि भूगोल पर एडिनवरा विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने प्रदेश को ४ बड़े कृषि विभागों तथा १० उपविभागों में व्यक्त कर प्रदेश के कृषि प्रारूप का वर्णन किया। ए०बी० मुखर्जी १९५१ में उत्तरी गंगा-यमुना दोआब की कृषि का वर्णन जनजाति की अर्थव्यवस्था के संदर्भ में किया। इन्होंने मेरठ जिले के चार गाँवों को चुनकर उनकी कृषि पद्धति, फसल चक्र मुद्रादायिनी फसले आदि का विस्तृत विश्लेषण कर यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि उन क्षेत्रों में कृषि अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा क्यों अधिक विकसित है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा कृषि भूमि उपयोग एवं अध्ययन क्षेत्र में के विभिन्न विकास खंडों में विभिन्न उन्नत कृषि यंत्रों के प्रयोग एवं उनकी संख्या के विश्लेषण हेतु यह शोध प्रस्तुत है। जिसमें शोधार्थी ने जिला सांख्यिकी पुस्तिका २०२० प्राप्त आंकड़ों के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के कृषि भूमि उपयोग

का भौगोलिक विश्लेषण विकासखंड वार प्रस्तुत किया है। जहां रसूलाबाद विकासखंड में २१९७६ हेक्टेयर भूमि शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल में सर्वाधिक है वहीं अकबरपुर विकासखंड में १६२४ हेक्टेयर भूमि शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल सबसे कम है साथ ही १ बार से अधिक बोया गया सर्वाधिक क्षेत्रफल रसूलाबाद विकासखंड में, एवं सबसे कम क्षेत्रफल मलासा विकासखंड में पाए जाते हैं, यह क्षेत्रफल क्रमशः २०४३३ एवं ६८२१ हेक्टेयर है।

सन्दर्भ

1. Jain, S. C. (1967) Agricultural Development in india, Kitab Mahal, Allahabad.
2. Sankhikiya Patrika-Kanpur Dehat. 2020.
3. Singh Uttar Pradesh Disst. Gazetters, Kanpur 1986
4. Singh Ujagir (1979) Indian economic and regional geography utter Pradesh Hindi Sansthan Lucknow.
5. Tiwari K.C. and Singh, B.N. 1994 agriculture geography, prayag pustak bhavan Allahabad.
6. www.pib.gov.in
7. <http://updes.up.nic.in>